

मध्य-प्रदेश के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के विद्यालय में निर्देशन  
एवं परामर्श विषय हेतु विकसित प्रमाप की प्रभाविता का  
उनकी उपलब्धि व प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन

शिक्षा संकाय में पी-एच.डी. की उपाधि की  
पूर्ति हेतु पूर्व प्रस्तुतीकरण शोध सारांश  
2024

शोध निर्देशक  
प्रो. लक्ष्मण शिंदे  
विभागाध्यक्ष  
शिक्षा अध्ययन शाला, दे. अ. वि. वि., इंदौर

शोधार्थी  
रामदास लखोरे  
शिक्षा अध्ययन शाला, दे. अ. वि. वि., इंदौर शिक्षा

## अनुक्रमणिका

विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
1.1.0 परिचय	1-1
1.2.0 औचित्य	1-3
1.3.0 समस्या कथन	3
1.4.0 उद्देश्य	3-4
1.5.0 परिकल्पनाएँ	4-5
1.6.0 परिसीमाएं	5
1.7.0 न्यादर्श	5-6
1.8.0 शोधप्राकल्प	6-7
1.9.0 उपकरण	7-11
1.10.0 प्रदत्त संकलन विधि	11-13
1.11.0 प्रदत्त विश्लेषण	13-14
1.12.0 निष्कर्ष	14-16
1.13.0 शैक्षिक निहितार्थ	16-17
1.14.0 भविष्य में शोध हेतु सुझाव	17

## 1.1.0 परिचय

प्रस्तुत शोध “मध्यप्रदेश के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय हेतु विकसित प्रमाप की प्रभाविता का उनके उपलब्धि व प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन” एक प्रयोगात्मक शोध है। प्रस्तुत अध्ययन उद्देश्यपरक न्यादर्शन तकनीक से चयनित देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर से संबद्धता प्राप्त बुरहानपुर जिले के तीन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 144 प्रशिक्षणार्थियों के न्यादर्श पर किया गया। अध्ययन में अध्ययन आदतें, व्यक्तित्व, समायोजन, बुद्धि एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर, चरों का आकलन मानकीकृत उपकरणों द्वारा किया गया, जबकि विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि एवं प्रमाप (स्व-अधिगम सामग्री) के प्रति प्रतिक्रिया के आकलन हेतु शोधक द्वारा विकसित उपकरणों का उपयोग किया गया एवं प्रदत्त संकलित कर उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग कर प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया एवं परिणाम प्राप्त किये गए।

## 1.2.0 औचित्य

मानव अपने जीवन के सभी पक्षों के अधिकतम विकास हेतु सदैव सक्रिय व सजग रहा है। विकास की इस प्रतिस्पर्धात्मक दौड़ के प्रयास में मानव अनेक समस्याओं से जूझता है और इन समस्याओं पर विजय पाने के लिए वह किसी न किसी व्यक्ति पर निर्देशन एवं परामर्श प्राप्त करने हेतु निर्भर रहा है। व्यक्ति के जीवन में निर्देशन एवं परामर्श महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीनकाल से ही निर्देशन एवं परामर्श शिक्षा का अभिन्न भाग रहा है। व्यक्तियों की समस्याओं के समाधान के लिए इसका किसी न किसी रूप में बहुतायात से उपयोग किया गया है। समाज के निरंतर बदलते स्वरूप के कारण मानव के समक्ष समस्याएं और जटिल हो गयी है। इन जटिल समस्याओं के हल हेतु निर्देशन एवं परामर्श का यथोचित ज्ञान होना आवश्यक है। निर्देशन एवं परामर्श का ज्ञान न केवल सैद्धांतिक हो वरन हर व्यक्ति को निर्देशन एवं परामर्श का व्यावहारिक ज्ञान भी महत्वपूर्ण है। अतः यह आवश्यक है कि उन्हें यह ज्ञान उनके शैक्षिक जीवन में ही इस प्रकार से दे दिया जाए कि वे उसका सर्वोत्तम उपयोग उनके दैनिक जीवन में कर सकें। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता एवं रुचि के अनुसार निर्देशन एवं परामर्श संबंधी शिक्षा लेने का अवसर प्राप्त हो।

शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया की प्रभाविता का स्तर शिक्षक एवं विद्यार्थी की भूमिका पर निर्भर करता है। शिक्षण में निहित उद्देश्य शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों की ही भूमिका पर आश्रित होते हैं अर्थात् शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में जितनी भूमिका शिक्षक की होती है, उतनी ही समान रूप से विद्यार्थी की भी होती है। परम्परागत शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका प्रभावी होती है। शिक्षक शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया के केन्द्र में होता है और सक्रिय भूमिका अदा करता है। वह अपना संपूर्ण ज्ञान और अनुभव बालकों को प्रदान करता है। सामान्यतः केवल एक ही शिक्षक एक बड़े समूह को अनुदेशन प्रदान करता है। विद्यार्थी शिक्षकों के दिशा-निर्देशों के अनुरूप ही अधिगम सम्पन्न करते हैं।

वर्तमान शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को देखते हुए इस बात की आवश्यकता स्पष्ट तौर पर प्रतिपादित की जा सकती है कि, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के केन्द्र में विद्यार्थी को रखा जाए, विद्यार्थी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में केवल निष्क्रिय ग्राही न हो अपितु सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी निभाये। समय, पाठ्य-सामग्री और शैक्षिकसंसाधनों के द्वारा यह प्रयास किया जाना चाहिए कि विद्यार्थियों के पास शिक्षण अधिगम प्रक्रिया हेतु पर्याप्त लचीलापन रहे, वे आवश्यकतानुसार इसमें परिवर्तन कर सकें। वे अधिगम की बाध्यता को स्वीकार ना करें वरन् स्व-प्रेरित होकर अधिगम कार्य सम्पन्न करें।

शिक्षक का कार्य एक अनुदेशक, एक पर्यवेक्षक के रूप में अधिगमकर्ता के कार्यों का निर्धारण तथा उनकी सहायता करने का होना चाहिए। शिक्षक का कार्य विद्यार्थी की अधिगम समस्याओं का समाधान करना होना चाहिए। इस हेतु शिक्षकों को विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को अपने शिक्षण में समावेश करना चाहिए। अधिगम की तत्परता, अभ्यास व प्रभाव का नियम, प्रतिपुष्टि व अर्थपूर्ण अधिगम को संपूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के केन्द्र में लाया जाना चाहिए ताकि शिक्षण अधिगम क्रियाओं की विधाओं में परिवर्तन कर इसे और अधिक प्रभावी और रुचिकर बनाया जा सके। इनका प्रयोग न केवल शिक्षण के श्रम, समय व ऊर्जा के अपव्यय को रोकेगा वरन् अधिगमकर्ता के ज्ञान, अनुभवों तथा अधिगम को समृद्धवान बनायेंगे।

इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की दिशा में शैक्षिक तकनीकी विभिन्न विचार, आयाम व विधियाँ प्रस्तुत करती है, जिनमें से प्रमाण एक है जो स्वयं एक स्व-अधिगम सामग्री है। यह

विद्यार्थी को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के केन्द्र में रखकर, स्व-अध्ययन गति, वैयक्तिक भिन्नता और विद्यार्थियों की तत्परता आदि महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखकर परम्परागत शिक्षण की अनुपयुक्तता को दूर करते हुए प्रभावी अधिगम करवाता है।

पूर्व शोधों के अध्ययन से स्पष्ट है कि इस दिशा में कुछ प्रयास जरूर किये गये हैं जो परम्परागत शिक्षण की तुलना में स्व-अध्ययन सामग्री (प्रमाप) को महत्व प्रदान करते हैं। इस दिशा में शाह (2002), इसे (2006), पाटीदार (2008), यादव (2015), शर्मा (2011), हरमाडे (2012), शुक्ला (2013), पाटीदार (2014), सिंह (2014), नरवरिया (2014), श्रीवास्तव (2016), छाबड़िया (2019), रामचंदानी (2021) आदि ने शोध कार्य किये हैं परंतु आवश्यकता इस बात की है कि इन कुछ प्रयासों को उस स्तर तक ले जाया जाये जहाँ एक नवीन सिद्धांतका प्रतिपादन किया जा सके और इस प्राणविहीन, लड़खड़ाते परम्परागत शिक्षण के स्थान पर स्व-अनुदेशन सामग्री (प्रमाप) को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में व्यापक तौर पर अपनाया जा सके। अतः उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान शोध की आवश्यकता प्रतीत होती है।

### **1.3.0 समस्या कथन**

प्रस्तुत शोध की निम्न समस्या थी -

मध्य प्रदेश के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय हेतु विकसित प्रमाप की प्रभाविता का उनकी उपलब्धि व प्रतिक्रिया के सन्दर्भ में अध्ययन

### **1.4.0 उद्देश्य**

प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य थे -

1. परम्परागत शिक्षण विधि समूह एवं प्रमाप समूह के विद्यार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में समायोजित उपलब्धि माध्य फलांकों की तुलना करना जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।

2. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय के समायोजित उपलब्धि माध्य फलांकों पर उपचार, अध्ययन आदत एवं इनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।
3. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय के समायोजित उपलब्धि माध्य फलांकों पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।
4. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय के समायोजित उपलब्धि माध्य फलांकों पर उपचार, समायोजन एवं इनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।
5. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय के समायोजित उपलब्धि माध्य फलांकों पर उपचार, बुद्धि एवं इनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।
6. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय के समायोजित उपलब्धि माध्य फलांकों पर उपचार, सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं इनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।
7. विकसित प्रमाप के प्रति प्रयोगात्मक समूह के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना।

### 1.5.0 परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ थी -

1. परम्परागत शिक्षण विधि समूह एवं प्रमाप समूह के विद्यार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में समायोजित माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं होगा जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।
2. बी.एड. विद्यार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय की उपलब्धि पर उपचार, अध्ययन आदत एवं इनकी अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा, जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।

3. बी.एड. विद्यार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय की उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा, जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।
4. बी.एड. विद्यार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय की उपलब्धि पर उपचार, समायोजन एवं इनकी अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा, जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।
5. बी.एड. विद्यार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय की उपलब्धि पर उपचार, बुद्धि एवं इनकी अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा, जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।
6. बी.एड. विद्यार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय की उपलब्धि पर उपचार, सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं इनकी अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा, जबकि पूर्व उपलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है।

### 1.6.0 परिसीमाएं

प्रस्तुत शोध की निम्न परिसीमाएं थी –

1. यह अध्ययन उद्देश्यपरक न्यादर्शन तकनीक से चयनित मध्य प्रदेश के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर से संबद्धता प्राप्त शिक्षा महाविद्यालयों में से बुरहानपुर जिले के तीन बी.एड. शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. के 144 प्रशिक्षणार्थियों के न्यादर्श पर किया गया।
2. स्व-अधिगम सामग्री (प्रमाण) बी. एड. कक्षा के विषय 'विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श की दो इकाई पर विकसित की गई।

### 1.7.0 न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु सो उद्देश्य न्यादर्श तकनीक का उपयोग किया गया था। न्यादर्श चयन हेतु सर्वप्रथम इंदौर शहर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से संबद्धता

प्राप्त सभी बी. एड. शिक्षण संस्थानों की सूची बनाई गयी, तथा सूची के आधार पर तीन बी. एड. शिक्षण संस्थानों, सेवा सदन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर, डॉ.जाकिरहुसैन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर एवं डॉ. बृजमोहन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर का चयन किया गया। इन शिक्षण संस्थानों में से सोद्देश्य न्यादर्शन तकनीक द्वारा डॉ. जाकिर हुसैन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर एवं डॉ. बृजमोहन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर के प्रशिक्षणार्थियों को नियंत्रित समूह व सेवा सदन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर के प्रशिक्षणार्थियों को प्रायोगिक समूह के रूप में चयन किया गया। प्रायोगिक व नियंत्रित समूह के लिए शिक्षण संस्थानों में से बी. एड. कक्षा के क्रमशः 73 तथा 71 प्रशिक्षणार्थियों का चयन द्वारा किया गया। ये प्रशिक्षणार्थी विभिन्न जाति वर्ग के थे। महाविद्यालयवार प्रायोगिक समूह व नियंत्रित समूह के छात्र-छात्राओं की संख्या को तालिका 1.1 में प्रस्तुत किया गया है -

**तालिका 1.1 - महाविद्यालयवार,लिंगवार प्रायोगिक व नियंत्रित समूहवारन्यादर्श**

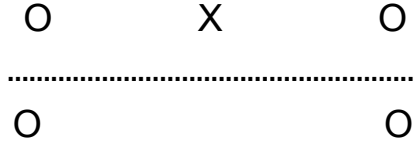
क्र.	समूह	न्यादर्श का आकार		
		छात्र	छात्राएं	कुल
1	प्रयोगात्मक	16	57	73
2	नियंत्रित	20	51	71
कुल		36	108	144

उपरोक्त तालिका 1.1 से स्पष्ट है कि प्रयोगात्मक समूह में 16 छात्र एवं 57 छात्राएं सहित कुल 73 प्रशिक्षणार्थी एवं नियंत्रित समूह में 20 छात्र एवं 51 छात्राओं सहित कुल 71 प्रशिक्षणार्थी थे।

### 1.8.0 शोध प्राकल्प



यह शोध प्रयोगात्मक प्रकार का था । शोध हेतु "गैरतुल्य नियंत्रित समूहपूर्व-पञ्च परीक्षणअभिकल्प" का उपयोग किया गया । इस शोध अभिकल्प का चित्रात्मक वर्णन निम्नानुसार है -



(केम्पबेल एवं स्टेनले-1963)

जहाँ

○ : अवलोकन

X : उपचार

... : असमतुल्यता

### 1.9.0 उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि, अध्ययन-आदत, व्यक्तित्व, समायोजन, बुद्धि एवं विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय पर विकसित प्रमाप के प्रति प्रतिक्रियाओं आदि चरों से संबंधित प्रदत्त संकलित किए गये । अध्ययन-आदत, व्यक्तित्व, समायोजन, बुद्धि एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर चरों का आकलन मानकीकृत उपकरणों द्वारा किया गया, जबकि विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि एवं प्रमाप के प्रति प्रतिक्रिया के आकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा विकसित उपकरणों का उपयोग किया गया था । इन उपकरणों का संक्षिप्त सार तालिका 1.2 में दिया जा रहा है -

### तालिका 1.2

शोध में प्रयुक्त उपकरणों का संक्षिप्त सार

क्र.	उपकरण का नाम	लेखक, वर्ष	पदों की संख्या	विश्वसनीयता	वैधता
1	अध्ययन आदत परीक्षण	मुखोपाध्याय एवं सनसनवाल(1963)	70	अर्धविच्छेदन विधि द्वारा 0.98	विषयवस्तु वैधता
2	व्यक्तित्व परीक्षण	माड्सले व्यक्तित्व अनुसूचि का भारतीय अनुकूलन (एस.एस. जलोटा व एस. डी. कपूर)	48	अर्ध विच्छेदन विधि द्वारा N के लिए विश्वसनीयता गुणांक का मान 0.71 व E के लिए विश्वसनीयता गुणांक का मान 0.42 है	विषयवस्तु वैधता
3	समायोजनअनुसूची	ए. के. पी. एवं आर. पी. सिंह ()	102	विश्वनीयता अर्ध विच्छेदन विधि द्वारागुणांक- 0.94है	विषयवस्तु वैधता
4	बुद्धि परीक्षण	जे. सी. रेवेंस 1961	60	भिन्न उम्र समूह के लिए विश्वसनीयता गुणांक का विस्तार 0.70--0.93	टर्मन मेरिल स्केल के साथ इसका सहसंबंध गुणांक 0.86
5	निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि परीक्षण	शोधकर्ता 2022	40	-----	आमुख वैधता
6	निर्देशन एवं परामर्श विषय में पर विकसित प्रतिक्रिया मापनी	शोधकर्ता 2022	30	-----	आमुखवैधता

### 1.9.1 अध्ययन-आदतें

अध्ययन की आदत छात्रों में विभिन्न प्रकार की होती है। इन आदत को मापा जा सकता है। शोधकार्य के अंतर्गत विद्यार्थियों की अध्ययन की आदत मापने के लिए मुखोपाध्याय एवं सनसनवाल द्वारा निर्मित अध्ययन आदत मापनी (1963) का प्रयोग किया गया। इस मापनी के अंतर्गत विभिन्न पहलुओं को लिया गया जो इस प्रकार है - अर्थग्रहण या समझ, एकाग्रता स्थपित करना, अंतर्क्रिया, मदद करना, अंकित करना एवं भाषा।

इस मापनी में प्रत्येक कथन के सामने पांच विकल्प दिए हैं जो हमेशा, बहुदा या अक्सर, कुछ वक्त, कभी-कभी, कभी नहीं दिये गये हैं। जो सकारात्मक एवं नकारात्मक रूप में हैं। छात्रों का मूल्यांकन मेनुअल में दी गयीं कुंजी के अनुसार किया गया। इस मापनी की विश्वनीयता अर्धविक्षेदन विधि द्वारा 0.98 पायी गयी।

## 1.9.2 व्यक्तित्व

प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तित्व के मापन हेतु आइजंक की माइसले व्यक्तित्व अनुसूची के एस. एस. जलोटा एवं एस. जी. कपूर द्वारा निर्मित भारतीय अनुकूलन का उपयोग किया गया। इस परीक्षण का उपयोग 14 वर्ष व उससे अधिक उम्र वाले व्यक्तियों पर किया जा सकता है। इस परीक्षणमें कुल 48 प्रश्न हैं। जो व्यक्ति की अंतर्मुखिता, बहिर्मुखिता व तंत्रिकातापिता का मापन करते हैं। परीक्षण हेतु सामान्य समाचार पत्र की शब्दावली का ज्ञान आवश्यक है। यद्यपि इस परीक्षण हेतु कोई समय सीमा नहीं दी गयी है, परंतु लघु मापनी को पूर्ण करने में 3 से 5 मिनट व दीर्घ मापनी को पूर्ण करने में 15 से 20 मिनट का समय लगता है। परीक्षण के प्रथम पेज पर दिये गये 1 से 12 प्रश्न लघु मापनी जबकि परीक्षण पुस्तिका के सभी 48 प्रश्न दीर्घ मापनी का निर्माण करते हैं। परीक्षण पुस्तिका के सभी 48 प्रश्न व्यक्तित्व की दो विमाओं के प्राप्तांकों पर विपरीत हैं। प्रत्येक प्रश्न के सामने 3 विकल्प हैं, जिनके अंक 0, 1, 2 हैं, जो अंतर्मुखिता व बहिर्मुखिता के निम्न से उच्च स्तर की ओर प्रत्येक एकल प्रश्न दो विमाओं में से एक में योग प्रदान करता है। पूर्ण मापनी के लिये तंत्रिकातापिता संयुक्त माध्य प्राप्तांक 10.0 प्रमाप विचलन के साथ 23.2 है बहिर्मुखिता के लिये संयुक्त माध्य प्राप्तांक 27.8 व प्रमाप विचलन 6.2 है। लघु मापनी के निष्कर्ष तंत्रिकातापिता प्राप्तांक के माध्य 7.1 तथा बहिर्मुखिता प्राप्तांक के माध्य 8.2 को प्रदर्शित करते हैं। दीर्घ मापनी के लिये N एवं E के मध्य सहसम्बंध गुणांक 0.223 है। N के लिये सहसम्बंध गुणांक का मान 0.71 व E के लिये सहसम्बंध गुणांक का मान 0.42 है।

## 1.9.3 समायोजन

प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन के मापन हेतु ए. के. पी. एवं आर. पी. सिंह (1971) द्वारा निर्मित समायोजन अनुसूचि का उपयोग किया गया। इस परीक्षण का उपयोग 19 वर्ष व उससे अधिक उम्र वाले विद्यार्थियों पर किया जा सकता है। इस परीक्षण में कुल 102 प्रश्न हैं। जो विद्यार्थियों के समायोजन का मापन करते हैं।

#### 1.9.4 बुद्धि

प्रशिक्षणार्थियों की बुद्धि के आकलन के लिए रेवेंस स्टैंडर्ड प्रोग्रेसिव मेट्राइसेस परीक्षण (रेवेंस, 1971) का उपयोग किया गया था। यह परीक्षण बुद्धि का अशाब्दिक परीक्षण है, जो अमूर्त बुद्धि का आकलन करता है। यह परीक्षण 65 वर्ष के उम्र समूह पर प्रशासित किया जा सकता है। इस बुद्धि परीक्षण में 60 प्रश्न हैं, जो पाँच भागों A, B, C, D एवं E में वर्गीकृत हैं, तथा प्रत्येक भाग में 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न बुद्धि के कई कारकों से संबंधित हैं, जैसे- अमूर्त चिंतन, विभेदकारी-चिंतन, समझने योग्य शक्ति, दूरी संबंध आदि। इन प्रश्नों का कठिनाई स्तर क्रमशः बढ़ता जाता है। इस परीक्षण में प्रत्येक प्रश्न की आकृतियों को स्पष्ट तथा आकर्षक दिखाया गया है, जिससे प्रयोज्य की रुची बनी रहती है। आकृतियों के नीचे कुछ भाग दिए गए हैं, जिनमें से एक भाग को चुनकर उपरोक्त आकृतियों को पूरा किया जा सकता है। इस परीक्षण में प्रारम्भ से अंत तक के प्रश्नों को प्रयोज्य को क्रमबद्ध रूप से हल करने के लिए दिया जाता है। यह एक शक्ति परीक्षण है, जिसमें प्रयोज्य को अपनी गति से कार्य करके उत्तर देने की स्वतंत्रता प्रदान की जाती है। इस परीक्षण को हल करने हेतु, समय सीमा का कोई बंधन नहीं है। इसको व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूप से प्रशासित किया जा सकता है।

इस परीक्षण से प्रश्नों को क्रमबद्ध हल करने की कार्यविधि का प्रामाणिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है। इस परीक्षण का विश्वनीयता गुणांक परीक्षण-पुनर्परीक्षण विधि से भिन्न उम्र समूह के साथ 0.83 तथा 0.93 है तथा अर्द्ध-विच्छेद विधि से विश्वनीयता गुणांक का विस्तार 0.06 से 0.90 है। इसका टर्मन मेरिल स्केल के साथ सहसंबंध गुणांक 0.86 पाया गया।

#### 1.9.5 सामाजिक-आर्थिक स्थिति

प्रशिक्षणार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति के आकलन के लिए ए. के. कलिआ एवं एस. साहु द्वारा निर्मित सामाजिक आर्थिक स्थिति मापनी(2011) का उपयोग किया गया था । यह परीक्षण शहरी एवं ग्रामीण दोनों ही स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का आकलन करता है । यह परीक्षण महाविद्यालय स्तर के आयु वर्ग के विद्यार्थियों पर प्रशासित किया जा सकता है ।

### 1.9.6 विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि के आकलन हेतु शोधक द्वारा विकसित 'विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि निकष परीक्षण'का उपयोग किया गया था । परीक्षण में विषय से संबंधित 40 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं । इनमें प्रत्येक प्रश्न के उत्तर हेतु चार विकल्प दिए गये हैं । प्रत्येक प्रश्नके उत्तर हेतु उत्तरदाता को सही ( ✓ ) का निशान लगाकर सही उत्तर का चयन करना होता था । सही उत्तर पर निशान लगाने पर उत्तरदाता को एक अंक प्रदान किया गया । 'विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि निकष परीक्षण' को हल करने के लिये 45 मिनट का समय लगता है । शोधक द्वारा उपलब्धि परीक्षण के फलांकन हेतु उत्तरकुंजी तैयार की गयी ।

### 1.9.7 विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श प्रमाप के प्रति प्रतिक्रिया

प्रमाप समूह (प्रायोगिक समूह) के प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय पर विकसित प्रमाप के प्रति प्रतिक्रिया के आकलन हेतु शोधार्थी द्वारा विकसित प्रमाप की सहायता से किया गया था । इस प्रतिक्रिया मापनी में विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श पर विकसित प्रमापके विभिन्न पक्षों जैसे- उद्देश्य, उदाहरण, विषयवस्तु, का संगठन व प्रस्तुतीकरण, भाषा शैली, वाक्य रचना, चित्र, संदर्भ सूची आदि से संबंधित 30 कथन थे । मापनी में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही स्तर के कथनों को सम्मिलित किया गया था ।

प्रतिक्रिया मापनी में प्रत्येक कथन के सामने विकल्प के रूप में पाँच बिंदु क्रमशः- पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, एवं पूर्णतः असहमत थे, इन बिंदुओं में से किसी एक बिंदु का चयन कर उत्तरदाता को सही का निशान लगाना होता था । सकारात्मक कथनों हेतु

फलांकन 5, 4, 3, 2, एवं 1 तथा नकारात्मक कथनों हेतु फलांकन 1, 2, 3, 4, एवं 5 था । प्रतिक्रिया मापनी में प्रतिक्रिया प्रदान करने की कोई समय सीमा नहीं थी । प्रतिक्रिया मापनी प्रदान करने के पश्चात प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिक्रियाएँ देने संबंधी आवश्यक निर्देश प्रदान किये गये थे ।

### 1.10.0 प्रदत्त संकलन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु सोद्देश्य न्यादर्शन तकनीक का उपयोग करते हुए सर्वप्रथम सोद्देश्य न्यादर्शन तकनीक से चयनित देवी अहिल्या

विश्वविद्यालय, इंदौर से संबद्धता प्राप्त बुरहानपुर जिले के 03 शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों (सेवा सदन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर, डॉ. ज़ाकीर हुसैन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर एवं डॉ. ब्रिजमोहन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर) का चयन किया गया तथा प्रत्येक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय के प्राचार्यों से सम्पर्क कर उन्हे शोध के उद्देश्यों से अवगत कराया गया एवं शोध हेतु अनुमति ली गयी । इन महाविद्यालयों में से डॉ. ज़ाकीर हुसैन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर एवं डॉ. ब्रिजमोहन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर को नियंत्रित समूह एवं सेवा सदन शिक्षा महाविद्यालय बुरहानपुर को प्रायोगिक समूह के रूप में चयन किया गया । नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के लिए महाविद्यालयों में से बी. एड. के क्रमशः 73-71 प्रशिक्षणार्थियों का चयन सोद्देश्य न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया ।

तत्पश्चात आश्रित चर 'निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि' के मापन हेतु दोनों समूहों पर निर्देशन एवं परामर्श विषय से संबंधित उपलब्धि परीक्षण प्रशासित किया गया था । तत्पश्चात स्वतंत्र चरों अध्ययन-आदत, व्यक्तित्व, समायोजन, बुद्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया । अध्ययन आदतों के आकलन हेतु : मुखोपाध्याय एवं सनसनवाल द्वारा निर्मित अध्ययन आदत मापनी (1963), व्यक्तित्व के आकलन हेतु : आइजंक की माइसले व्यक्तित्व अनुसूची के एस. एस. जलोटा एवं एस. जी. कपूर द्वारा निर्मित भारतीय अनुकूलन. समायोजन के आकलन हेतु ए. के. पी. एवं आर. पी. सिंह (1971) की समायोजन अनुसूचि, बुद्धि के आकलन हेतु : रेवेंस स्टैंडर्ड प्रोग्रेसिव मेट्राइसेस

परीक्षण (1971) एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति के आकलन हेतु : ए. के. कलिआ एवं एस. साहु की सामाजिक आर्थिक स्थिति मापनी (2011) प्रशासित की गयी।

इन परीक्षणों को प्रशासित करने के पश्चात शोध के प्रायोगिक समूह को निर्देशन एवं परामर्श विषय पर विकसित प्रमाप (स्व-अधिगम सामग्री) उपचार स्वरूप पढने हेतु दी गयी थी। यह प्रमाप (स्व अधिगम सामग्री) पढने का कार्य 48 दिनों (40 कार्यदिवसों) तक, प्रत्येक कार्य दिवस 60 मिनट तक चला। इस अवधि में परम्परागत (व्याख्यान) समूह को प्रत्येक कार्यदिवस 60 मिनिट एक कालांश के आधार पर परम्परागत (व्याख्यान) विधि से महाविद्यालयीन शिक्षक व्दारा पढाया गया। पढाने का कार्य 40 दिनों तक चला। उपचार अवधि समाप्त होने के पश्चात दोनों समूहों पर निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि के आकलन हेतु पञ्च परीक्षण के रूप में निर्देशन एवं परामर्श उपलब्धि परीक्षण प्रशासित किया गया, साथ ही आश्रित चर निर्देशन एवं परामर्श विषय पर विकसित प्रमाप के प्रति प्रतिक्रिया के आकलन हेतु प्रायोगिक समूह पर प्रतिक्रिया मापनी प्रशासित की गयी।

### 1.11.0 प्रदत्त विश्लेषण :

उद्देश्य अनुसार प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया

-

1. निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर परम्परागत शिक्षण विधि समूह एवं प्रमाप समूह के विद्यार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में समायोजित उपलब्धिमाध्य फलांकों की तुलना हेतु सांख्यिकीय तकनीकी एक मार्गीय सहप्रसरण विश्लेषण (One Way ANCOVA) का उपयोग किया गया।

2. निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर बी.एड. विद्यार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि पर उपचार, अध्ययन आदत एवं उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन, सहप्रसरण विश्लेषण (ANCOVA) के 2x2 कारकीय अभिकल्प व्दारा किया गया।

3. निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर बी.एड. विद्यार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि पर उपचार, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन, सहप्रसरण विश्लेषण ( ANCOVA) के 2x2 कारकीय अभिकल्प द्वारा किया गया ।

4. निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर बी.एड. विद्यार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि पर उपचार, समायोजन एवं इनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन, सहप्रसरण विश्लेषण ( ANCOVA) के 2x2 कारकीय अभिकल्प द्वारा किया गया ।

5. निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर बी.एड. विद्यार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय की उपलब्धि पर उपचार, बुद्धि एवं इनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन, सहप्रसरण विश्लेषण ( ANCOVA) के 2x2 कारकीय अभिकल्प द्वारा किया गया ।

5. निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर बी.एड. विद्यार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय की उपलब्धि पर उपचार, बुद्धि एवं इनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन, सहप्रसरण विश्लेषण ( ANCOVA) के 2x2 कारकीय अभिकल्प द्वारा किया गया ।

6. निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लेकर बी.एड. विद्यार्थियों के विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय की उपलब्धि पर उपचार, सामाजिकआर्थिक स्तर एवं इनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन, सहप्रसरण विश्लेषण( ANCOVA) के 2x2 कारकीय अभिकल्प द्वारा किया गया ।

7. निर्देशन एवं परामर्श विषय पर विकसित प्रमाप के प्रति प्रयोगात्मक समूह की प्रतिक्रियाओं के अध्ययन गहनता गुणांक द्वारा किया गया ।

### 1.12.0 निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से निम्नलिखित उद्देश्यवार निष्कर्ष प्राप्त हुए -



## उद्देश्य 1:

नियंत्रित समूह के प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा प्रयोगात्मक समूह के प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में उपलब्धि सार्थक रूप से उच्च पायी गयी, जबकि प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लिया गया था।

## उद्देश्य 2:

- प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि पर अध्ययन आदतों का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, जबकि प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लिया गया था।
- प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि पर उपचार एवं अध्ययन आदतों की अंतर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, जबकि प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लिया गया था।

## उद्देश्य 3:

- प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि पर व्यक्तित्व का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, जबकि प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लिया गया था।
- प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि पर उपचार एवं व्यक्तित्व की अंतर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, जबकि प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लिया गया था।

## उद्देश्य 4:

- प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि पर समायोजन का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, जबकि प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लिया गया था।

- प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि पर उपचार एवं समायोजन की अंतर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, जबकि प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लिया गया था।

#### उद्देश्य 5:

- प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि पर बुद्धि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, जबकि प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लिया गया था।
- प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि पर उपचार एवं बुद्धि की अंतर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, जबकि प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लिया गया था।

#### उद्देश्य 6:

- प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, जबकि प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लिया गया था।
- प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि पर उपचार एवं सामाजिक आर्थिक स्तर की अंतर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, जबकि प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय में पूर्व उपलब्धि को सहचर लिया गया था।

#### उद्देश्य 7:

- प्रयोगात्मक समूह के प्रशिक्षणार्थियों की विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श विषय पर विकसित प्रमाण के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की प्रतिक्रियाएं सकारात्मक थीं।

### 1.13.0 शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि 'विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श'के अध्यापन हेतु स्व-अधिगम सामग्री का प्रभावी उपयोग किया जा सकता है। स्व-अधिगम सामग्री को विद्यार्थी अपनी रुचि, गति व आवश्यकतानुसार अध्ययन कर बेहतर अधिगम कर सकते हैं। 'विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श' विषय में उपलब्धि व्याख्यान विधि की तुलना में स्व-

अधिगम सामग्री व्दारा अधिक पायी गई तथा स्व-अधिगम सामग्री के प्रति विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएं भी अत्यधिक सकारात्मक थी। अतः इसके निम्न शैक्षिक निहितार्थ हो सकते हैं-

1. स्व-अधिगम सामग्री व्दारा विद्यार्थी अपनी आवश्यकता व समयानुसार स्वयं अधिगम करते हैं। स्व-अधिगम सामग्री में प्रयुक्त युक्तियों के उपयोग से विद्यार्थी विषय के प्रति रूचि विकसित कर सकेंगे।
2. स्व-अधिगम सामग्री व्दारा विद्यार्थी स्वयं विषय वस्तु को पढ़कर आगे बढ़ते हुए सीखते जाते हैं कई ज्ञानेंद्रियों का उपयोग होने से अधिगम प्रभावी व स्थायी होता है। कठिन अवधारणाओं को गतिविधि आधारित होने से सरलता से सीखा जा सकता है।
3. इस विधि में बिना किसी विशेषज्ञ की सहायता लिये विद्यार्थी स्वयं का आकलन कर उपलब्धि का स्तर ज्ञात कर सकते हैं।
4. स्व-अधिगम सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों में स्वतंत्र अधिगम की भावना का विकास होता है। साथ ही उनमें वैज्ञानिक तर्क क्षमता एवं वैज्ञानिक दृष्टीकोण की सोच विकसित होगी।
5. स्व-अधिगम सामग्री का अनुसरण कर शिक्षक अन्य विषयों, प्रकरणों पर स्व-अधिगम सामग्री विकसित कर सकेंगे जिससे उनका शिक्षण प्रभावी होगा और वे अपने शिक्षण में गुणवत्ताला सकेंगे।
6. स्व-अधिगम सामग्री की उपलब्धि बढ़ाने में प्रभाविता को देखते हुए शिक्षण शिक्षण संस्थानों के प्राचार्य, प्रशासक विषय-शिक्षकोंको स्व-अधिगम सामग्री का विकास एवं इसका अध्यापन में उपयोग करने हेतु निर्देशित कर सकते हैं।
7. स्व-अधिगम सामग्री की प्रक्रिया स्व-निर्देशित व वैज्ञानिकता का उपयोग कर विद्यार्थी स्व-अध्यापन हेतु प्रेरित किया जा सकता है।

#### 1.14.0 भविष्य में शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित भविष्य में निम्नलिखित शोध किये जा सकते हैं-

1. प्रस्तुत शोध संबंधी स्व-अधिगम सामग्री हिंदी भाषाधारित है। अन्य भाषानुकूल भी स्व-अधिगम सामग्री विकसित की जा सकती है।

2. स्व-अधिगम सामग्री से संबंधित शोध करने वाले शोधार्थी भी अन्य विषयों पर इसी प्रकार की स्व-अधिगम सामग्री का विकास कर उसकी प्रभाविता का अध्ययन कर सकते हैं।
3. प्रस्तुत शोध हेतु देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौरसे संबद्ध बी. एड. शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों पर किया गया था इसी तरह अन्य विश्वविद्यालयों से संबद्ध शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध कार्य में 144 विद्यार्थियों के न्यादर्श पर किया गया था। भविष्य में न्यादर्श में परिवर्तन कर शोध कार्य किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध कार्य में प्रयुक्त चरों (स्वतंत्र, आश्रित व सहचर) की संख्या में परिवर्तन कर अन्य शोध कार्य किए जा सकते हैं।